

संगीतमय गधा-पंचतंत्र

एक धोबी का गधा था। गधे का नाम था--उद्धत। वह दिन भर कपड़ों के गट्ठर इधर से उधर ढोने में लगा रहता। धोबी स्वयं कंजूस और निर्दयी था। अपने गधे के लिए चारे का प्रबंध नहीं करता था। बस रात को चरने के लिए खुला छोड़ देता। निकट में कोई चरागाह भी नहीं थी। शरीर से गधा बहुत दुर्बल हो गया था।

एक रात उस गधे की मुलाकात एक गीदड़ से हुई। गीदड़ ने उससे पूछा 'कहिए महाशय, आप इतने कमज़ोर क्यों हैं?'

गधे ने दुखी स्वर में बताया कि कैसे उसे दिन भर काम करना पड़ता है। खाने को कुछ नहीं दिया जाता। रात को अंधेरे में इधर-उधर मुंह मारना पड़ता है।

गीदड़ बोला 'तो समझो अब आपकी भुखमरी के दिन गए। यहां पास में ही एक बड़ा सब्जियों का बाग है। वहां तरह-तरह की सब्जियां उगी हुई हैं। खीरे, ककडियां, तोरई, गाजर, मूली, शलजम और बैंगनों की बहार है। मैंने बाग तोड़कर एक जगह अंदर घुसने का गुप्त मार्ग बना रखा है। बस वहां से हर रात अंदर घुसकर छककर खाता हूं और सेहत बना रहा हूं। तुम भी मेरे साथ आया करो।' लार टपकाता गधा गीदड़ के साथ हो गया।

बाग में घुसकर गधे ने महीनों के बाद पहली बार भरपेट खाना खाया। दोनों रात भर बाग में ही रहे और पौ फटने से पहले गीदड़ जंगल की ओर चला गया और गधा अपने धोबी के पास आ गया।

उसके बाद वे रोज रात को एक जगह मिलते। बाग में घुसते और जी भरकर खाते। धीरे-धीरे गधे का शरीर भरने लगा। उसके बालों में चमक आने लगी और चाल में मस्ती आ गई। वह भुखमरी के दिन बिल्कुल भूल गया। एक रात खूब खाने के बाद गधे की तबीयत अच्छी तरह हरी हो गई। वह झूमने लगा और अपना मुंह ऊपर उठाकर कान फड़फड़ाने लगा। गीदड़ ने चिंतित होकर पूछा 'मित्र, यह क्या कर रहे हो? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है?'

गधा आंखें बंद करके मस्त स्वर में बोला 'मेरा दिल गाने का कर रहा हूँ। अच्छा भोजन करने के बाद गाना चाहिए। सोच रहा हूँ कि ढैचू राग गाऊँ।'

गीदड ने तुरंत चेतावनी दी 'न-न, ऐसा न करना गधे भाई। गाने-वाने का चक्कर मत चलाओ। यह मत भूलो कि हम दोनों यहां चोरी कर रहे हैं। मुसीबत को न्यौता मत दो।'

गधे ने टेढ़ी नजर से गीदड को देखा और बोला 'गीदड भाई, तुम जंगली के जंगली रहे। संगीत के बारे में तुम क्या जानो?'

गीदड ने हाथ जोड़े 'मैं संगीत के बारे में कुछ नहीं जानता। केवल अपनी जान बचाना जानता हूँ। तुम अपना बेसुरा राग अलापने की जिद छोड़ो, उसी में हम दोनों की भलाई है।'

गधे ने गीदड की बात का बुरा मानकर हवा में दुलती चलाई और शिकायत करने लगा 'तुमने मेरे राग को बेसुरा कहकर मेरी बेइज्जती की है। हम गधे शुद्ध शास्त्रीय लय में रेंकते हैं। वह मूर्खों की समझ में नहीं आ सकता।'

गीदड बोला 'गधे भाई, मैं मूर्ख जंगली सही, पर एक मित्र के नाते मेरी सलाह मानो। अपना मुंह मत खोलो। बाग के चौकीदार जाग जाएंगे।'

गधा हंसा 'अरे मूर्ख गीदड! मेरा राग सुनकर बाग के चौकीदार तो क्या, बाग का मालिक भी फूलों का हार लेकर आएगा और मेरे गले में डालेगा।'

गीदड ने चतुराई से काम लिया और हाथ जोड़कर बोला 'गधे भाई, मुझे अपनी गलती का अहसास हो गया है। तुम महान गायक हो। मैं मूर्ख गीदड भी तुम्हारे गले में डालने के लिए फूलों की माला लाना चाहता हूँ। मेरे जाने के दस मिनट बाद ही तुम गाना शुरू करना ताकि मैं गायन समाप्त होने तक फूल मालाएं लेकर लौट सकूँ।'

गधे ने गर्व से सहमति में सिर हिलाया। गीदड़ वहां से सीधा जंगल की ओर भाग गया। गधे ने उसके जाने के कुछ समय बाद मस्त होकर रेंकना शुरू किया। उसके रेंकने की आवाज सुनते ही बाग के चौकीदार जाग गए और उसी ओर लट्ठ लेकर दौड़े, जिधर से रेंकने की आवाज आ रही थी। वहां पहुंचते ही गधे को देखकर चौकीदार बोला "यही है वह दुष्ट गधा, जो हमारा बाग चर रहा था।"

बस सारे चौकीदार डंडों के साथ गधे पर पिल पड़े। कुछ ही देर में गधा पिट-पिटकर अधमरा गिर पड़ा।

(सीख: अपने शुभचिन्तकों और हितैषियों की नेक सलाह न मानने का परिणाम बुरा होता है।)

.....

यह कथा सुनाकर सुवर्णसिद्धि बोला, "तुमने भी मेरा कहना नहीं माना। अब अपनी हालत देख लो!"

चक्रधर ने उसाँस भरकर कहा, "तुम ठीक ही कहते हो, भाई। जिसके पास अपनी बुद्धि नहीं होती और जो मित्र की सलाह पर भी नहीं चलता, वह मंथरक नामक जुलाहे की तरह नष्ट हो जाता है।"

सुवर्णसिद्धि ने पूछा, "मंथरक की क्या कहानी है?"

चक्रधर बताने लगा--

अनुवाद - कुलदीप

भंगीउभय गण-पंठउंउ

एक ऐमी का गण था। गण का नाम था--उसूडा वरु दिन हर कपड़ों के गहुर उणर में उणर टैने में लगा रकडा। ऐमी भूय कंएभ उर निरुयी था। मपने गण के लिए गारें का पूंण नहीं करडा था। मभ राउ के गारने के लिए पला केरु टैडा। निकए में केरें गारगारु ही नहीं थी। मरीर में गण मरुउ सुल के गथा था।

एक राउ उभ गण की भुलाकाउ एक गीरु में करें। गीरु ने उभमें पुका 'कलिर भुलासय, मुप उउने कभएर कुं कै?'

गण ने सुपी भूर में गडाथा कि कैसे उमें दिन हर काम करना पडुडा है। पाने के कुछ नहीं दिया रडा। राउ के मणेर में उणर-उणर भुरु भरना पडुडा है।

गीरु नेला 'उे मभएि मभ मुपकी सुपभरी के दिन गाए। वहां पाम में ही एक मरु मल्लिचें का मग है। वहां उरु-उरु की मल्लियां उगी करें है। पीरें, ककलियां, उेरें, गारर, भुली, मलएभ उर गैगनें की मरुार है। मैंने मग उेरुकर एक एगरु मंडर भुमने का गुपु भाज मना रापा है। मभ वहां में कर राउ मंडर भुमकर कककर पाडा ऊं उर मेरुउ मना रका ऊं। उभ ही मेरे भाष मुथा करे।' लार एपकाउ गण गीरु के भाष के गथा।

मग में भुमकर गण ने भलीनें के मरु पकली मरु हरपेए पाना पाया। टैनें राउ हर मग में ही रके उर पे टैने में पकले गीरु एंगल की उर मला गथा उर गण मपने ऐमी के पाम मु गथा।

उभके गाने वे रीए राउ के एक एगल मिलते। गाने में प्रभुते और
एही हरकर पाते। पीरे-पीरे गणे का मरीर हरने लगा। उभके
गालें में प्रभक मुने लगी और गाल में भुभी मु गरीं। वरु सुपभरी
के दिन मिलुल हुल गय। एक राउ प्रभु पाते के गाने गणे की
उमीघउ मस्त्री उरु रुरी के गरीं। वरु लभने लगा और मपन भुंरु
उपर उरुकर का न दरुदरुने लगा। गीदरु ने पिंडितु केकर
प्रका 'भिउ, वरु कृ कर रके के? उभारी उमीघउ ते ठीक है?'

गण मुंपि गंद करके भभु धुर में गेला 'भेरा मिल गाने का कर
रुका है। मस्त्री केएन करने के गाने गाने पादिग। भेरा रुका ऊं
कि हैए राग गां।'

गीदरु ने उरुंउ गेउावनी सी 'न-न, रिभा न करन गणे हारें।
गाने-वाने का एकर भउ गला। वरु भउ हुले कि रुभ देने वरुं
गेरी कर रके है। भुभीगउ के गेउा भउ है।'

गणे ने ऐसी नएर में गीदरु के दोषा और गेला 'गीदरु हारें,
उभ एंगली के एंगली रके। मंगीउ के गारें में उभ कृ एने?'

गीदरु ने काष ऐरु 'मै मंगीउ के गारें में कुळ नकीं एनउ। केवल
मपनी एन गगाना एनउ ऊं। उभ मपन गेभुरा राग मलापने की
एरु केके, उभी में रुभ देने की हलारें है।'

गणे ने गीदरु की गउ का वुरा भानकर रुवा में दलड़ी गलारें
और मिकाघउ करने लगा 'उभने भेरे राग के गेभुरा करुकर
भेरी गेउल्लडी की है। रुभ गणे मुदू माभूष लघ में रंकते है। वरु
भुंने की मभाए में नकीं मु भकउ।'

गीदरु ठेला 'गणे छारें, मै भुत्त एंगली मली, पर एक भिउ के
नउे मेरी मलाऊ भाने। मपन भुंरु भउ पिले। गग के गे कीदर
एग एरंगे।'

गण रुंभा 'मरे भुत्त गीदरु! मेरा गग मुनकर गग के
गे कीदर उे कृ, गग का भालिक छी द्रुलें का कर लेकर
मुपगा छर मेरे गले मै छालेगा।'

गीदरु ने गडुगरें मे काम लिखा छर काष ऐरुकर ठेला 'गणे
छारें, भुत्त मपनी गलती का मरुभाम के गघा कै। तुम भुत्त
गघक कै। मै भुत्त गीदरु छी तुमरे गले मै छालने के लिए द्रुलें
की भाला लाना पाऊउं। मेरे एने के एम भिनए गद की तुम
गन सुनु करन उकि मै गघन मभापु केने उक द्रुल भालाएं
लेकर लैए मकुं।'

गणे ने गघ मे मरुभउि मै भिर किलाया। गीदरु वहां मे भीण
एंगल की छर छार गघ। गणे ने उमके एने के कुळ मभय गद
भमु केकर रंकन सुनु किया। उमके रंकने की मुवाए मुनउे की
गग के गे कीदर एग गा छर उभी छर लहु लेकर दैरे,
एणर मे रंकने की मुवाए मु रली थी। वहां पंउउे की गणे के
दोपकर गे कीदर ठेला "बली कै वरु द्रुल गण, ऐ रुभारा
गग छर ररु घा।'

गम मरे गे कीदर रुंके के भाष गणे पर पिल पछ। कुळ की दैर
मे गण पिए-पिएकर मणभरा गिर पछ।

(भीप: मपने सुनुगिनुके छर कितैधिये की नेक मलाऊ न भानने
का परिणमभरा देउ कै।)

.....

बहु कथा मुनाकर भुवळुभिस्त्रि गेला, "तुमने ही मेरा करुना नहीं
भाना। मग मपनी कालउ टोप ले!"

एकुणर ने उर्भाभ हरकर कला, "तुम लीक ली करुते के, हारों।
एभके पाम मपनी वृस्त्रि नहीं केडी छर ऐ भिडू की मलारु पर
ही नहीं एलउ, वरु भंघरक नभक एलाके की उररु नहु के
एउ के।"

भुवळुभिस्त्रि ने पुळा, "भंघरक की कृ करुनी के? "

एकुणर गउने लगा--

मनुवाए - कुलमीप एर